RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-02
Issue-10
October-2017
ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com

राम कथा संदर्भ और कलाएँ

डॉ. अनिलसिंह

अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग, सोनुभाऊबसवंत महाविद्यालय, शहापुर, ठाणे-421 601 (महाराष्ट्र)

भारत एक विशाल भूभाग है जो प्राकृतिक संपदा ओं से आच्छादित है। रामायण में जिन मूल्यों प्राचीन मान्यताएं,परंपराओं को उद्घाटित किया गया है,वही हमें आधुनिक युग में इन मूल्यों का कहीं न कहीं विकृत रूप भी दिखलाई पड़ता है। एक ऐसा समय आयेगा जब राम के सभी मूल्य सम्पूर्ण विश्व को अवश्य प्रकाशवान करेगा। राम कथा भारतीय संस्कृति की विरासत है।

राम कथा की महत्ता के संदर्भ में डॉ.योगेंद्र प्रताप सिंह ने ठीक ही कहा है "रामकथा' को एक मानना उसकी शक्ति को कमतर करना है।भिन्न-भिन्न रूपों में विद्यमान 'राम कथा' ही हमारी बहूरंगी सांस्कृतिक विशेषता और शक्ति है।'वाल्मीकि रामायण' में जो राम कथा प्राप्त होती है।उसमें राम-जानकी मार्ग एवं 'राम- वनगमन मार्ग' के रूप में लगभग 280 स्थल भारतवर्ष में तथा 165 स्थल श्रीलंका में आज भी विद्यमान है। क्या वाल्मीकि को भारत का सबसे बड़ा सर्वेक्षक नहीं माना जा सकता? किसी भी विदेशी इतिहासकार या पर्यटक द्वारा इतनी स्थलों का वर्णन नहीं किया गया है,जो क्रमबद्ध रूप में आज भी उपलब्ध है।'अयोध्या शोध संस्थान' के पास क्रमबद्ध रूप में सभी स्थलों के फोटो और वीडियो भी उपलब्ध है।"[1]

भारतवर्ष में ही नहीं बल्कि विश्व में राम का महत्व है विश्व के बहुत से देशों में हमने देखा है कि राम के आदर्शों को उनके गुणों को आत्मसात करने की कोशिश की गई है निश्चय ही वे राम के महत्व को रेखांकित करते हैं। हम न केवल उनसे प्रेरणा प्राप्त करते हैं बल्कि जीवन में उनके आदर्शों को अपनाने की भी सोचते हैं। यही कारण है कि भारत ही नहीं विश्व पटल पर राम और राम की कथा विविध भाषाओं में जिस तरह से व्यापक रूप में फैला हुआ है निश्चित ही वे भारतीय परंपरा को समझने के लिए एक सुंदर रूप, सुंदर विचार, सुंदर संस्कार हमारे सामने उद्घाटित करते हैं।

सृष्टि के त्रिगुणात्मक रूप के संदर्भ में डॉ. श्रीराम परिहार ने ठीक ही कहा है "यह सृष्टि त्रिगुणात्मक है। सत, रज, और तम गुड़ अपने-अपने अनुपात और प्रभाव से प्रत्येक जीव,वस्तु और मनुष्य को संचालित करते रहते हैं। ये तीनों गुण ही कभी बहुकोणीय और कभी दो ध्रुवी स्थिति पैदा करते हैं। धर्म अधर्म, जन्म-मृत्यु, गति- गति, चेतन – जड़, प्रकाश- अंधकार, दिन-रात कर्म-अकर्म,अच्छा बुरा गुण-अवगुण,मनुष्य-राक्षस तथा निर्माण-विनाश की अनुकूलता-प्रतिकूलता के रथ पर आरूढ़ यह सृष्टि चल रही है। पुण्य-पाप की अवधारणाएं इन्हीं के संदर्भों से जन्मी है। जड़-चेतन, गुण-दोषमय,विश्व कीन्ह करतार । संत – हंस,गुन गहही पय,परिहरि वारि विकार ।' विधाता ने इस विश्व की संरचना जड़-चेतन, गुण-दोष युक्त की है। इस विश्व में संत हंस स्वरूप है,जो गुण रूपी दूध को ग्रहण कर लेते हैं तथा पानी विकारों को छोड़ देते हैं।"[2]

मनुष्य संस्कृति की सर्वोत्तम उपलब्धि कला है। 'कला' शब्द का पहला प्रयोग हमें 'ऋग्वेद' में मिलता है। जैसा कि कहा गया है-'यथा कला यथा शफ ,मध शन स न्यामति ।' यही नहीं हमें पौराणिक ग्रंथों में और भरतमुनि के 'नाट्य शास्त्र' में भी इसका स्पष्ट प्रयोग देखने को मिलता है। ऐसी कोई भी विद्या ज्ञान या शिल्प नहीं है जिसे कला न माना जाए कला रूपी शब्द को हम जितने भी वर्गों में बांट ना चाहे बांट सकते हैं, पर उसका कोई निश्चित खाका हम निर्धारित नहीं कर सकते। वास्तु कला,चित्रकला,मूर्तिकला,संगीत कला,काव्य कला आदि कलाएं सर्वश्रेष्ठ मानी गई है। अतः कला को कला की दृष्टि से ही देखा जाना चाहिए। आज हमारे वर्तमान युग कीसबसे बड़ी आवश्यकता बनती जा रही है।

संसार के जीवित कलाओं में भारतीय कला परंपराओं की अबाध प्रवाह की लंबी परंपरा दृष्टिगोचर होती है। डॉ. वासुदेव अग्रवाल की मान्यता है "भारतीय कला को दीर्घकालीन 'रूप सूत्र' कहना उचित है जिसने देश केप्रत्येक भूभाग में अपना अर्ध अर्ध्य अर्पित किया । इस रुप-समृद्धि में अनेक जातियों ने भाग लिया है,किंतु इसकी मूल प्रेरणा और अर्थव्यंजना मुख्यतः भारतीयही है। जब भारतीय संस्कृति का प्रसार समुद्र पार और पर्वतों के उस पार हुआ, तब भारतीय कला के रूप और उसके अर्थ भी उन देशों में बुद्धमूल हुए। द्विपान्तर या हिन्दोशिमा से लेकर मारुचीन या मध्य एशिया तक का विशाल भूखंड भारती कला की मेघ वृष्टि से उत्पन्न फुहारों से भर गया।"[3]

भारतीय संस्कृति और राम साहित्य से जुड़े कला संदर्भ में आदि काल से लेकर आज तक निरंतर विभिन्न कला रूपों में राम की मनमोहकता,सौंदर्य की अवर्णनीय छटा, देखने को मिल सकती है । राम मानो आज भी जनमानस से उतनी ही शिद्दत से जुड़े हैं । राम का कलात्मक संदर्भ कहीं न कहीं आज के मूल उद्देश्यों से भटक हुए लोगों को न केवल सही राह दिखलाता है,अपितु वास्तविक अर्थों में सही दिशा निर्देश भी करता है।

भारतीय मूर्ति कला एवं स्थापत्य कला के महत्ता को रेखांकित करते हुए प्रा. पाइक राव संदीप ने ठीक ही लिखा है "रामकथा को विश्व के सम्मुख रखने वाले वाल्मीकि ने भी शायद नहीं सोचा होगा कि उनका कथानक या 'रामायण' की घटना इस प्रकार से समस्त कलाओं को प्रभावित करेगी। मूर्तिकला एवं शिल्पकला में राम कथा का अंकन कब

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

से प्रारंभ हुआ कहना कठिन है। धार्मिकता की अभिव्यक्ति करना मूर्तिकला एवं स्थापत्य कला का उद्देश्य जरूर रहा है। परंतु 'कलाओं का ध्येय केवल धर्म प्रचार नहीं था,बल्कि कलाओं द्वारा ईश्वर या परमसत्ता को साकार करने का प्रयास किया गया है।' भारतीय मूर्तिकला एवं स्थापत्य कला में कलाकार की सृजनात्मक कल्पना शक्ति का उपयोग सार्वजनिक तथा दर्शकों के मानसिक धरातल को विकसित करने वाले तत्व के रूप में हुआ है। भारतीय मूर्ति कला एवं स्थापत्य कला द्वारा जीवन की उन्नति का भाव जिस समृद्ध एवं पुष्ट रूप में भारतीय कला में मिलता है, शायद ही अन्य किसी देश की कला में मिल जाए। रामकथा के जीवन-संस्कारों की स्थापना तथा मानव मात्र की समुन्नती का पर्याय समझने के कारण उसे मूर्ति एवं स्थापत्य कला में डालने का प्रयास हुआ है1"[4]

हिंदू मंदिरों के कला शिल्प को उत्तर और दक्षिण भारत के मंदिरों में देखा जा सकता है। इन मंदिरों में हमें हिंदू दर्शन की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति, धर्म तत्व की प्रधानता,प्रतीकात्मक पारंपरिकता, सामाजिकता आदि विशेषताओं की प्रधानता है। अपने देश में राम और रामराज्य की बहुत महिमा है। भारत में शायद ही कोई ऐसा गांव होगा जहां राम का मंदिर न होशायद ही कोई होगा, जिसमें राम कथा न सुनी हो। अब प्रश्न उठता है कि राम कौन है?वे लोक जीवन में इतने प्रिय क्यों हैं? इनके बाद भी बहुत से धर्मनिष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ प्रजा हितौषी,न्यायप्रिय का इतना गायन क्यों? भक्त लोग कहते हैं कि राम पतित पावन है,वे खेवनहार और तारनहार भी है। सबके दाता राम-राम संवारे काम। परंतु आज जो रामकथा मिलती है,उसे सुनकर या पढ़कर लोग के मन में अलग-अलग विचार उत्पन्न होते हैं।

भारतीय संस्कृति और परंपरा का सुंदर आकलन हमें तुलसीदास के राम साहित्य में दृष्टिगोचर होता है। रामायण भारतीय संस्कृति का प्रेरणा स्रोत है। मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के नाते जिस समाज में जी रहा है,जिन लोगों के बीच में वह विचार विनिमय कर रहा है। उन सब में कहीं न कहीं संस्कृति मूल रूप से समायी हुई है। साहित्य और समाज का अटूट संबंध पर प्रकाश डालते हुए डॉ.जहीरूद्दीन पठान ने ठीक ही लिखा है "समाज और साहित्य का जैसा अन्योन्याश्रित संबंध है। वैसा ही संबंध संस्कृति और साहित्य का है। साहित्य में संस्कृति की परिव्याप्ति शाश्वत प्रभाव के रूप में पाई जाती है। साहित्य में पुरातनकाल से चली आ रही धारणाओं, संस्कारों,सभ्यताओं,विश्वासों एवं लोकवार्ताओं आदि का प्रभाव सदा बना रहता है, क्योंकि साहित्य सृष्टा कभी अपनी मानवीय लोकपरक एवं लोक उपयोगी प्रवृत्ति से विलग नहीं हो सकता। साहित्य संस्कृति का प्रतिबिंब ही नहीं होता,बल्कि वह उसका अभिन्न अंग होता है। भारतीय साहित्य ने संस्कृति के प्राणवान अंशों को आत्मसात किया है। इसमें राम साहित्य ने भी अपनी भूमिका बखूबी निभाई है।"[5]

वर्तमान युग में जब राम के साहित्य की महिमा को धूमिल करने के प्रयास हो रहे हो,तब त्रेता युग के राम के स्वरूप विश्लेषण की मांग हो जातीहै। राम का शाब्दिक अर्थ है जिसमें सब रम जाए अथवा जिसमें सारे देवता रमण करें वही राम है। राम भारतीय जनमानस के चिरंतन लोकनायक हैं। वे सदा-सर्वदा से यहां के लोग मन में रमे हुए हैं। भारतीय परंपरा में जो कुछ भी वर्णनीय है, जो कुछ भी सर्वोत्तम है तथा जो आदर्श है,वे राम के रूप में साकार हो गए हैं। रामपुरी मनुष्यता के हैं। वे देश,काल,धर्म,ज्ञान,पंथ,परंपरा सबसे परे हैं। उनका व्यक्तित्व ही अपने आप में एक महाकाव्य है। कदाचित इसीलिए हर भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में उन पर सबसे अधिक लिखा गया है। वह हर संवेदनशील तथा प्रशस्त दृष्टि वाले रचना को समाहित करते रहे हैं।

गुरु ग्रंथ साहब जैसे महान धार्मिक ग्रंथ में हजारों बार 'राम' शब्द का प्रयोग हुआ है जो राम भक्ति का ज्वलंत उदाहरण है। सिख धर्म के पवित्र ग्रंथ 'गुरु ग्रंथ साहिब' में राम भक्ति का स्वरूप विशेष रूप से न केवल वर्णित है बल्कि उसकी व्याख्या भी विविध रूपों में की गई है। 'श्रीगुरु ग्रंथ साहिब' में चौथे गुरु राम दास की वाणी में राम भक्ति का जिस मार्मिकता से उल्लेख किया गया है उसे निम्न पंक्तियों में देखा जा सकता है-

'रतनारत पदारथ बहू बहू सागर भरिया राम ।
बागी गुरुवाणी लागे तिनी हाथि चड़िया राम ॥'

राम कथा को लेकर बहुत से लोगों की धारणा है कि राम कथा एक पौराणिक काल्पनिक कथा है,पर ज्यादातर लोग रामकथा को सत्य वृतांत के रूप में ही मानते हैं । रावण का साधु वेश में आने का भावार्थ यही है कि माया और विकार पहले पहल अपना साधु स्वरूप ही प्रकट करते हैं। इसके बाद अपने बनावटी आकर्षण से प्रभावित कर मनुष्य को अपनी ओर खींचते हैं। इस प्रकार निराकार राम से मिलने के लिए प्रयास पुरुषार्थ करना पड़ता है अर्थात पवित्रता का व्रत लेना पड़ता है। योगिनी आत्मा के मार्ग में कई परीक्षाएं और कष्ट भी आते हैं और उसे अपनी पवित्रता साबित करने के लिए अग्निपरीक्षा से भी गुजरना पड़ता है, परंतु एक दिन उसकी सच्चाई निखरती है। यही सच्ची रामकथा है। राम हमारी अनंत मर्यादाओं के प्रतिक पुरुष है। इस विराट चरित्र को गढ़ने में वाल्मीकि से लेकर महाकवि भास,कालिदास,भवभूति और तुलसीदास तक न जाने कितने राम भक्तों ने ना जाने कितने रूप में अपनी लेखनी और प्रतिभा के बल से राम के चरित्र को न केवल संवारा है, बल्कि उसे अवलोकनीय भी बनाया है।

भारतीय साहित्य में भी राम कथा की अभिव्यक्ति कई रूपों में हुई है। इस तरह रामकथा की विरासत अलग-अलग संस्कृतियों में फैली हुई है और समय के साथ फलती फूलती रही है। कुछ संकीर्ण सोच के लोग इसे सांप्रदायिक पुट देकर विरासत को चोट पहुंचाने से भी पीछे नहीं हटते। सच तो यही है कि रामकथा हमें आपस में जोड़ती है और श्रेष्ठतम मानव मूल्यों के साथ जीने की प्रेरणा देती है । रामायण के मूल कथा में जहां एक और कई स्तरों पर आदर्श- बुराई के संघर्ष के ढेरों रोचक प्रसंग है। जो बच्चों से बूढ़े तक सभी को आकर्षित करते हैं। हमारे देश के सामाजिक ताने-बाने को एक व्यवस्थित रूप देने में इस अद्भुत कथा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हालांकि इसके कुछ प्रसंगों की थोड़ी बहुत आलोचना भी होती रही है। पर ये प्रसंग महाकाव्य की मूल भावना से काफी भिन्न जान पड़ते हैं। ऐसा लगता है कि दकियानूसी तत्वों द्वारा बाद में इसे जोड़ा गया हो। सुखद आश्चर्य की बात यह है कि इतने वर्षों में भी इसका आकर्षण और प्रभाव कितना गहरा है, इसका आभाष एशिया के

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

अनेक देशों की लोक कथाओं,नाटक,नित्य, स्थापत्य कला,मूर्तिकला आदि में रामकथा को मिले स्थान,से भी होता है।

भारतीय संस्कृति की महत्ता सत्य,शिव और सुंदर के उन मानदंडों से है जो भारतीय जनमानस के स्तर को और भी उन्नत बना देता है। भारतीय संस्कृति निरंतर परिवर्तनशील रही है। भारतीय संस्कृति और कलाओं ने विकास की उच्चतम स्थितियों तक पहुंचकर सात समुद्र की सीमाओं को पार कर भारतीयता कि गहरी छाप छोड़ी है। विश्व के विभिन्न देशों लंका,मध्य एशिया,चीन, कोरिया,तिब्बत, वर्मा आदि देशों में हिन्दू व्रत-त्योहार तथा रामायण आदि का ससक्त प्रभाव देखने को मिलता है। इन देशों में आज भी नाटकों,नृत्यों और लोकगीतों के जरिए कहीं न कहीं भारतीय संस्कृति से ओतप्रोत हैं।

भारतीय साहित्य यदि बड़ा है तो वह है राम साहित्य के कारण। विभिन्न सांस्कृतिक भावनाओं के वर्णन के साथ-साथ रामचरितमानस भारतीय संस्कृति का जीता जागता प्रमाण कहा जा सकता है। "रामचरित और राम कथा दोनों ही भारतीय जनमानस के लिए प्रेरणा के स्रोत है। जिनसे यहां की सभी कलाएं प्रकाशमान हुई है। राम साहित्य केवल साहित्य तक सीमित नहीं रहा है,बल्कि मूर्ति स्थापत्य कला में भी यत्र-तत्र बिखरा है। कला प्रतीकों के रूप में भी अपनाई गई है। आराधना के लिए ईश्वर को मूर्ति के माध्यम से मूर्त-मान किया गया। इन कलाओं के माध्यम से पारिवारिक,आदर्श,अन्याय अत्याचार का विरोध,राजा के कर्तव्य एवं दायित्व,राज धर्म की रक्षा आदि का संदेश दिया गया है जो राम साहित्य का मूल आधार माना गया है।"[6]

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि राम साहित्य एवं रामायण भारतीय जनमानस के हृदय में सदियों से व्याप्त रहा है और आगे भी रहेगी। अर्थात तब तक यह फलित होता रहेगा। राम रामायण में ही नहीं अपितु भारत के संपूर्ण ललित कलाओं,हस्तकला में और अच्छादित होता रहेगा । अतः उसके महत्व को जितना भी प्रचारित प्रसारित किया जाए कम ही है। यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी की राम साहित्य भारतीय संस्कृति का उद्गगीथ है।

संदर्भ :

1. राम कथा: कला संदर्भ- डॉ.योगेंद्र प्रताप सिंह,पृष्ठ-34
2. मर्यादा राम की-डॉ. श्रीराम परिहार,पृष्ठ-15
3. कला और संस्कृति-डॉ.वासुदेव अग्रवाल पृष्ठ-12
4. मूर्ति एवं स्थापत्य कलाओं मेँ राम साहित्य-प्रा. पाईक राव पृष्ठ-137
5. तुलसी कृत राम साहित्य और भारतीय संस्कृति- डॉ.जहीरूद्दीन पठान-पृष्ठ-141
6. राम कला: संदर्भ-डॉ.पी.के.सिंह पृष्ठ-140

© RRIJM 2015, All Rights Reserved